कड़कनाथ मुर्गी पालन : लाभदायक व्यवसाय

राकेश कुमार यादव, आई एस तोमर एवं नरेन्द्र कुमावत

"कड़कनाथ मुर्गी काले मांस, जो उच्च गुणवत्ता, स्वादिष्ट एवं औषधीय गुण वाला होने के कारण जानी जाती है। इसकी तीन प्रजातियॉ पाई जाती है जिसमे से जेट ब्लैक प्रजाति सबसे अधिक मात्रा में पाई जाती है। नर कड़कनाथ का औसतन वजन 1.80 से 2.00 किलोग्राम के लगभग होता है। कड़कनाथ मादा प्रति वर्ष 60 से 70 अण्डे देती है इनके अण्डे छोटे मध्यम आकार के हल्के भूरे गुलाबी रंग के व वजन में 30 से 35 ग्राम के होते है।"

झाबुआ मध्यप्रदेया का आदिवासी बाहुल्य जिला है। इस जिले की पहचान यहां पर पाई जाने वाली मुर्गी की प्रजाति कडकनाथ के कारण पूरे देश में है। कडकनाथ कुक्कुट आदिवासी बाहुल्य झाबुआ जिला ही नही अपितु मध्य प्रदेश राज्य का गौरव है तथा वर्तमान में कड़कनाथ झाबुआ जिले की पहचान बना हुआ है कडकनाथ की उत्पति झाबुआ जिले के कट्ठीवाड़ा, अलीराजपुर के जंगलो में हुई है। क्षेत्रीय भाषा में कड़कनाथ को कालामासी भी कहा जाता है क्योकि इसका माँस, चोंच, कलंगी, जुबान, टागें, नाखून, चमड़ी इत्यादि काली होती है। जो कि मिलैनिन पिगमेंट की अधिकता के कारण होता है इसके माँस में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में तथा वसा न्यूनतम मात्रा में होता है जिससे हृदय व डायवीटीज रोगियों के लिए उत्तम आहार है। इसका माँस स्वादिष्ट व आसानी से पचने वाला होता है इसकी इसी विशेषता के कारण बाजार में इसकी माँग काफी होती है एवं काफी ऊचीं दरों पर आसानी से विक्रय किया जाता है।

कड़कनाथ की तीन प्रजातियाँ (जेट ब्लैक, पैन्सिल्ड, गोल्डन) पाई जाती है जिसमें से जेट ब्लैक प्रजाति सबसे अधिक मात्रा में एवं गोल्डन प्रजाति सबसे कम मात्रा में पाई जाती है नर कड़कनाथ का औसतन वजन 1.80 से 2.00 किलोग्राम के लगभग होता है मादा कड़कनाथ का औसतन वजन 1.25 से 1. 50 किलोग्राम के लगभग होता है कड़कनाथ मादा प्रतिवर्ष 60 से 70 अण्डे देती है इनके अण्डे छोटे मध्यम आकार के हल्के भूरे गुलाबी रंग के व वजन में 30 से 35 ग्राम के होते है।

(राजमाता विजयाराजे धिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

यह प्रजाति अपने काले मांस, जो उच्च गुणवत्ता, स्वादिष्ट एवं औषधीय गुण वाला होने के कारण जानी जाती है। लेकिन धीरे धीरे इसकी संख्या मे कमी एवं आनुवांषिक विकृति के कारण इसका अस्तित्व खतरे में है। कृषि विज्ञान केन्द्र, झाबुआ द्वारा इसके महत्व एवं विलुप्तता को देखते हुए राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना अन्तर्गत कडकनाथ के अस्तित्व को बचाने एवं कड़कनाथ पालन को कृषकों के कृषि के साथ जीवनयापन एवं अतिरिक्त आय का आधार बनाने का कार्य किया गया। कड़कनाथ पालन, मुर्गी की अन्य प्रजातियों को पालने जैसा ही है। सामान्यतः कड़कनाथ पालन कृषकों द्वारा दो तरीके से किया जाता है। पहले तरीके में कृषक पारम्परिक रूप में घर के आंगन या पिछवाड़े में सीमित मात्रा में कड़कनाथ पालन करते है। दूसरे तरीके में वैज्ञानिक पद्धति से आवास निर्माण कर कड़कनाथ पालन करते है। कड़कनाथ पालन में प्रबंधन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है कड़कनाथ पालन में लगभग 80 प्रतिशत समस्यायें कड़कनाथ प्रबंधन में की गई लापरवाही के कारण ही उन्नत होती है। अतः कड़कनाथ पालन के पूर्व प्रबंधन जानकारी होनी चाहिए ताकि आर्थिक क्षति का सामना न करना पड़े।

पारम्परिक पद्धति

पारम्परिक पद्धति में कृषक कड़कनाथ पालन हेतु कोई भी सुरक्षात्मक एवं सैद्धातिक या प्रयोगात्मक तरीके नही अपनाता है। संतुलित आहार एवं उचित औषधीय उपचार न होने से कड़कनाथ की वृद्धिदर काफी कम तथा मृत्युदर काफी अधिक होती है। इस पद्धति में संतुलित आहार न होने से कड़कनाथ को एक किलोग्राम वजन प्राप्त करने में लगभग 6–7 महिने का समय लग जाता है। साथ ही उचित औषधीय उपचार की कमी से मृत्युदर सामान्यतः 50 प्रतिशत से ऊपर होती है।

वैज्ञानिक पद्धति

वैज्ञानिक पद्धति में कृषक कड़कनाथ पालन निर्धारित आवास संरचना निर्माणकर संतुलित आहार एवं उचित औषधीय उपचार समय पर अपनाकर मुनाफा प्राप्त करता है। इस पद्धति में संतुलित आहार देने से कड़कनाथ 3) –4 महिने में एक किलोग्राम वजन प्राप्त कर लेता है तथा उचित औषधीय उपचार से मृत्युदर 10 प्रतिशत तक सीमित हो गई है।

वैज्ञानिक पद्धति में छोटे स्तर (100 कड़कनाथ हेतु) कड़कनाथ पालन के लिए निम्नानुसार सुविधाएं होनी चाहिए।

आवास	– 10x12 फीट आकार
बर्तन	– दाना एवं पानी के लिए सुविधा
औषधि उपचार	– बीमारियों के टीकाकरण एवं औषधि
कड़कनाथ चंजे	– 0 दिन, 7 दिन, 15 दिन, उम्र के चूजें
दाना	– कड़कनाथ की उम्र के अनुसार दाने का प्रकार
अन्य	– लकड़ी का बुरादा, प्रकाश इत्यादि

उपरोक्त सुविधाएं जुटाकर कड़कनाथ पालन आसानी से एवं सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

आवास व्यवस्था

वैज्ञानिक पद्धति में कड़कनाथ पालन हेतु आवास पक्का एवं हवादार होना चाहिए। आवास पूर्व से पश्चिम दिशा की लम्बाई में होना चाहिए ताकि प्रकाश सीधा प्रवेश ना करें। आवास के अन्दर, बरसात या अन्य माध्यम से पानी घुसना नही चाहिए।

आवास में जगह के अनुसार ही चूजे रखे जाने चाहिए तथा चूजे पालने से पहले आवास पूर्ण रूप से बीमारियों के जीवाणु एवं कीड़ों से मुक्त होना चाहिए। चूजे आने के दो दिन पूर्व से लकड़ी का बुरादा 2 इंच मोटा फर्श पर बिछा लेना चाहिए।

ऐसा देखा गया है कि कृषक फार्म क्षमता से आधिक चूजों का पालन करते हैं और जगह के आभाव के कारण बीमारियों की शुरुआत हो जाती है। जगह का आभाव होने पर सबसे पहले बुरादा गीला होता है। अमोनिया बनती है फिर सांस संबंधी समस्या उत्पन्न होती है, ई. कोलाई आती है, काक्सी आती है, पीकिंग होती है। इस प्रकार कड़कनाथ आवास बीमारियों का जनक बन जाता है।

दाना एवं पानी के बर्तन

आटोमेटिक ड्रिकर या फीडर 100 चूजों पर दो लगाना चाहिए। पुराने चद्दर के बने फीडर 100 चूजों पर 3 लगाना चाहिए दाने एवं पानी के बर्तनों की ऊँचाई हमेशा मुर्गे की कंधे की ऊँचाई के बराबर होना चाहिए ताकि दाना खाने एवं पानी पीने में मुर्गे को असुविधा न हो एवं दाना पानी खराब होने से बचा रहे यदि ऊँचाई का ध्यान नही दिया गया तो मुर्गे आपस में नोंचना चालू कर देते है दाना खाते समय दाना गिराते ज्यादा है।

दाना एवं पानी देने के तरीका

पानी देने का तरीका :– पानी हमेशा साफ व ताजा पिलाना चाहिए। पानी देने से पूर्व पानी के बर्तन को हमेशा निरमा से स्वच्छ कर लेना चाहिए तत्पश्चात् ताजा पानी देना चाहिए।

पानी में विटामिन या कोई भी अन्य दवा देना हो तो, सुबह के समय पहले पानी में देना चाहिए। दवाईयाँ पिलाने के लिए कम पानी का प्रयोग करना चाहिए। जिससे कि दवायुक्त पूरा पानी चूजे पी सके। दवायुक्त पानी समाप्त हो जाने के बाद सादा पानी देना चाहिए।

दाना देने का तरीका :– दाना देने से पूर्व दाने के बर्तनों की सफाई आवश्यक रुप से कर लेना चाहिए एवं दाना फीडरों में इतना भरना चाहिए कि दाना गिरने न पायें। दाना भरने के बर्तनों को सप्ताह में दो बार निरमा या ब्लीचिंग से अवश्य धोना चाहिए।

प्रत्येक दो घण्टे में दाना डालना चाहिए या तो फीडरो में खाली हाथ चलाना चाहिए ताकि दाने में जो पावडर हो वह भी दाने के बड़े टुकड़ों के साथ उठता (खपत) जाये क्योंकि दाने में जो पावडर होता है, आवश्यक तत्व उसी में अधिक मात्रा में पाये जाते है।

दाना मिलाने का तरीका

यदि दाने में कोई दवा मिलाना हो तो दवा की सही मात्रा तौलकर पहले थोड़े से दाने में मिला लेना चाहिए। इसके बाद दवा मिले हुए दाने को, जितने दाने में मिलाना हो उसके ऊपर बुरक लेना चाहिए बुरकते समय ध्यान रखना चाहिए कि दवा मिले दाने का पावडर न उडने पाये नही तो दवा की मात्रा भी उड़ जायेगी। इसके लिए सावधानीपूर्वक दाने में दवा मिलानी चाहिए।

दाना मिलाते समय यह देखना आवश्यक है कि दाने में नमी, फफूंद आदि तो नही है, यदि है तो ऐसे दाने का प्रयोग भूलकर भी नहीं करना चाहिए या नमी युक्त ढेलों को छानकर अलग कर लेना चाहिए एवं दाने को सुखा लेना चाहिए ध्यान रहे नमी युक्त ढेले, दाने में मिक्स नहीं करना चाहिए।

कड़कनाथ के लिये हमेशा अच्छा दाना, अच्छी दवा, अच्छा पानी, अच्छे चूजों का उपयोग करना चाहिए। मुर्गियों के लिये उपयोग में लाने वाला दाना अधिक दिनों तक तैयार करके नहीं रखना चाहिए क्योंकि इसमें विषाक्त पदार्थ बनने लगते है जो कि मुर्गियों के लिए हानिकारक है।

कडकनाथ के लिए दाने के प्रकार

कडकनाथ को मुख्यतः तीन प्रकार का दाना दिया जाता है :–

1. स्टार्टर मेस :– इस प्रकार के दाने में चूजों की आवश्यकतानुसार प्रोटीन एवं एनर्जी बराबर मात्रा में दी जाती है। इस प्रकार के दाने

को देने की निर्धारित आवधि 500 ग्राम वजन तक मानी जाती है और आवधि 30–40 तक होती है।

2. प्री फिमिशर मेस :– इस प्री फिमिशर मेस को मुर्गों का वजन जब 500 ग्राम हो जाता तब चालू करते है। और तब तक देते है जब तक वजन 750 ग्राम हो जाये। इस प्रकार के दाने में एनर्जी की तुलना में प्रोटीन की मात्रा कम होती है। जैसे ऊर्जा / प्रोटीन 55:45

3. फिनिशर मेस :– इसके 750 ग्राम भार से चालू करना चाहिए एवं अंतिम अवस्था तक चालू रखना चाहिए। इस दाने में ऊर्जा एवं प्रोटीन का प्रतिशत क्रमशः 60 एवं 40 प्रतिशत होता है।

डीविकिंग (चोंच काटाई)

मुर्गियों में डीविकिंग एक महात्वपूर्ण कार्य है। जिससे मुर्गियों को सबसे अधिक तनाव पड़ता है। इस कार्य में यदि सावधानी नही बरती जाये तो उत्पादन क्षमता में बुरा पड़ सकता है।

ध्यान रखने योग्य बातें

- चोंच का कटाव सही होना चाहिए ताकि आगे समय चोंच अधिक न बढ़ सके।
- यदि चोंच जल्दबाजी में काटी गई है तो जल्दी बढ़ जाती है। और पिकिंग (मुर्गा में चोंच के द्वारा एक दूसरे को नोंचना) होने की पूरी संभावना बन जाती है। एवं मुर्गियों को सन्तुलित आहार ग्रहण करने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

बीमारी की रोकथाम / बचाव

उचित प्रबंधन से कड़कनाथ में आने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है अतः बाहरी पशु, पक्षी या इंसान जो अपने साथ बीमारी के कारक लाते है इनका मुर्गी आवास में प्रवेश रोकना चाहिए क्योंकि सही टीकाकरण, सही सफाई एवं बाहरी जीवित प्राणियों के उचित ध्यान रखना चाहिए आने वाली बीमारियों को रोकने का प्रमुख कारक है।

टीकाकरण

टीकाकरण के द्वारा पक्षियों में विषाणु जनित बीमारियों को रोका जाता हैं। क्योंकि विषाणु से होने वाली बीमारी एक बार यदि मुर्गियों में आ जाती है तब मुर्गियाँ मरने लगती है और उनका बचना मुश्किल हो जाता बहुत ही मुश्किल या असम्भव हो जाता है। इसलिए विषाणु जनित बीमारियों के बचाव के लिए टीकाकरण ही एक मात्र उपाय है।

अतः चार माह में 33800 / – रुपये का न्यूनतम अनुमानित लाभ प्राप्त होगा इस प्रकार प्रति वर्ष 101400 / – रुपये (वर्ष में तीन चक्र) का लाभ व प्रति माह 8450 / – रु. का शुद्ध लाभ कड़कनाथ पालन से प्राप्त कर सकते हैं।

कडकनाथ में टीकाकरण

सप्ताह	दिन	टीका का नाम	देने की विधि
1.	7	एफ–1, बी–1 (रानीखेत बीमारी)	आँख व नाक में एक बूंद डालकर
2.	14	गम्बेरो एन्टरमीडीएट	पीने के पानी में
3.	21	लासोटा (रानीखेत बीमारी)	पीने के पानी में
4.	35–45	गम्बेरो एन्टरमीडीएट	पीने के पानी में
5.	60 – 65	आर–2 बी	इन्जेक्सन द्वारा माँस पेशियों या त्वचा के नीचे

100 कड़कनाथ कुक्कुट पालने हेतु कार्ययोजना

विवरण	खर्च (रू. में)
स्थाई खर्च	
100 कड़कनाथ पक्षी हेतु भवन का निर्माण एक वर्ग फीट प्रति पक्षी के हिसाब से एवं 270 रुपये प्रति वर्ग फीट निर्माण लागत।	27,000
अन्य खर्च	
दाना पानी के वर्तन 100 कड़कनाथ पर 4 दाना एंव 3 पानी बर्तन लागत 300 रुपये प्रति वर्तन।	2,100
लाइट फिंटिग इत्यादि।	1,000
संचालन राशि	
कुक्कुट आवास की पुताई, बुरादा व सफाई हेतु आवश्यक राशि।	1000
सात दिवसीय कड़कनाथ चूजा (एफ–1 टीकाकरण सहित) खरीदने हेतु आवश्यक राशि प्रति चूजा 65 रुपये की दर से।	6,500
कुक्कुट आहार की प्रति पक्षी 4 किलोग्राम एंवम 2800 रुपये प्रति 100 किलोग्राम की दर से आव यक राशि।	11,200
औषधि एवं टीकाकरण प्रति पक्षी 5 रुपये की दर से।	500
मजदूरी	6000
कुल संचालन राशि	25200
कुल आवश्यक बजट प्रति हितग्राही	
स्थाई खर्च	27,000
अन्य खर्च	3,100
संचालन हेतु खर्च	25200
कुल खर्च	55300
प्राप्तियॉ	
पक्षी के विक्रय से प्राप्त राशि (प्रति पक्षी औसत वजन 1.25 किलोग्राम) तथा 90 पक्षियों (10 प्रतिशत मृत्यु दर) का विकय 650 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से	58500
गनी वेग व खाद के विकय से प्राप्त राशि	500
कुल प्राप्तियॉ	59000
शुध्द लाभ	
कुल प्राप्तियॉ	59000
संचालन राशि	25200
शुध्द लाभ	33800

कडकनाथ में दवाइयाँ देने का कार्यक्रम :–

1–2 दिन	इलेक्ट्राल / गुड़ का पानी	इलेक्ट्राल 1–2 ग्राम / लीटर पानी गुड़ 8–10 ग्राम / लीटर पानी
1–10 दिन	विटामिन एडी$_3$सी.ई.,	3 मि. ली. / 100 चूजे
	विटामिन बी काम्पलेक्स,	7 मि. ली. / 100 चूजे
3–5 दिन	एन्टीबायोटिक	0.5 ग्राम / लीटर पानी
8–10 दिन	प्रोबायोटिक्स	1 ग्रम / लीटर पानी
11–13 दिन	केल्सियम	15–20 मि. ली. / 100 चूजे
15–20 दिन	लीवर टॉनिक	10 मि. ली. / 100 चूजे